*अपने समय और अपने शब्दों के प्रयोग में कभी लापरवाही नहीं बरतें। क्योंकि ये नहीं वापस आते है और न ही वापस मौका देता है।-अज्ञात।*


विचार-प्रवाह

देहरादून, रविवार, 22 मई 2022

पेज थ्री

www.page3news.in


# भारत अपने रुख पर कायम

**यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से यह लगातार दसवां मौका है, जब भारत उससे संबंधित मसले पर संयुक्त राष्ट्र में होने वाली वोटिंग से दूर रहा। लेकिन इस बार खास बात यह रही कि दोनों पक्षों से भारत को अपनी तरफ खींचने की कोशिशें पूरी शिद्दत से की गईं।**

अमन सिंह।।

यूक्रेन में रूसी सैनिकों द्वारा आम नागरिकों के कथित नरसंहार संबंधी आरोपों के आधार पर आखिर रूस को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद से निलंबित कर दिया गया। भारत एक बार फिर वोटिंग से अलग रहा। यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से यह लगातार दसवां मौका है, जब भारत उससे संबंधित मसले पर संयुक्त राष्ट्र में होने वाली वोटिंग से दूर रहा। लेकिन इस बार खास बात यह रही कि दोनों पक्षों से भारत को अपनी तरफ खींचने की कोशिशें पूरी शिद्दत से की गईं। अमेरिका लगातार कभी संकेतों में तो कभी खुलकर यह बात कहता आ रहा है कि भारत को यूक्रेन मामले को लेकर पश्चिमी देशों के साथ खड़ा होना चाहिए। दूसरी तरफ रूस ने भी अब तक दिखाए जा रहे संयम को लगभग तिलांजलि देते हुए यह कह दिया था कि अगर कोई देश गुरुवार की वोटिंग से बाहर रहता है तो उसे गैर–दोस्ताना व्यवहार माना जाएगा। रूस चाहता था कि भारत इस प्रस्ताव के खिलाफ वोट दे। उसकी वजह यह थी कि संयुक्त राष्ट्र के नियमों के मुताबिक इस प्रस्ताव के पास होने के लिए उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई बहुमत की जरूरत थी। मतदान से गैरहाजिर रहने वाले देश नहीं गिने जाते। वैसे, इस मामले पर जिस तरह से वोटिंग हुई है, उसमें भारत अगर रूस के साथ खड़ा भी हो जाता तो उसका निलंबन नहीं रुकता।

इस प्रस्ताव पर भारत का रुख क्या रहता है, इसमें सबकी दिलचस्पी बनी हुई थी। यह सवाल उठ रहा था कि अभी तक भारत दोनों खेमों के बीच अपने तटस्थ रुख के साथ जो संतुलन बनाए हुए है, क्या वह उसे छोड़ देगा? खैर, ऐसा नहीं हुआ। भारत ने यूक्रेन युद्ध को लेकर न्यूट्रल रहने की नीति बरकरार रखी है। इसके साथ उसने फिर से यह संकेत दिया है कि वह इस मामले में राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखते हुए ही आगे बढ़ेगा। दूसरी बात यह कि भारत ने सिद्धांतों के आधार पर यूक्रेन युद्ध और रूस की उसमें भूमिका को लेकर एक राय बनाई है। और सिद्धांतों से समझौता उसे मंजूर नहीं है।

जल्द ही भारत और अमेरिका के बीच 2 प्लस 2 बातचीत होने वाली है। उससे पहले एक बार फिर भारत ने यह बात कही है कि वह रूस के साथ संबंध खत्म नहीं करने जा रहा। भारत इस बारे में लगातार अमेरिका और पश्चिमी देशों को अपना रुख बता रहा है। दूसरी तरफ, मानवाधिकार परिषद की वोटिंग में चीन ने रूस के हक में मतदान किया। इससे अमेरिका और पश्चिमी देशों को यह बात समझनी चाहिए कि भारत का रुख जहां सिद्धांतों से प्रेरित है, वहीं चीन मौकापरस्ती कर रहा है। वह अमेरिका के साथ वर्चस्व की लड़ाई के लिए इस मामले का इस्तेमाल कर रहा है।

## वास्तुशास्त्र




**अशोक वोहरा।** सुख–समृद्धि की चाहत किसे नहीं होती। हम सभी अपने जीवन को सुखद बनाने के लिए तरह–तरह के प्रयास करते रहते है। इसके बाबजूद कई बार ऐसा होता है कि हमारे काम नहीं बनते और हम तनाव में आ जाते है, जिस कारण घर में अशांति पैदा हो सकती है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें घर में वास्तुदोष भी एक कारण हो सकता है। वास्तु दोष उत्पन्न होने से घर में नकारात्मक ऊर्जा बढ़ने लगती है,जिसके कारण हमारे साथ दुःख और अशुभ घटनाएं घटित होने लगती हैं। वास्तुशास्त्र में कुछ सरल उपाय बताए गए हैं,जिनको अपनाकर आप सुख–शांति को आकर्षित कर सकते हैं। दक्षिण–पूर्व (अग्नि तत्व)के वास्तु दिशा क्षेत्र में लाल घोड़ों का जोड़ा और उत्तर दिशा क्षेत्र में हरे पौधे रखने से भी अधिक धन आगमन की संभावना बनती है।

## संपादकीय

### दुष्प्रचार रुकें

योगी आदित्यनाथ के उत्साहित समर्थक इस तरह के दुष्प्रचार से स्वयं को रोकें। ऐसा नहीं है कि योगी आदित्यनाथ की मर्जी से वे ऐसा कर रहे हैं। योगी आदित्यनाथ लोकप्रिय नेता हैं और यह पूरी बीजेपी के हित में है कि वे ज्यादा लोकप्रिय हों। बीजेपी में प्रधानमंत्री का पद अभी रिक्त भी नहीं है कि उसके लिए किन्हीं दो नेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाए। बीजेपी विचारधारा की पार्टी है। संघ परिवार का घटक होने के नाते उसके कुछ विचार स्पष्ट हैं। जो भी नेता विचारधारा के प्रति समर्पित होगा, वह छोटे स्तर की राजनीति नहीं कर सकता। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मसलों पर संसद में अमित शाह को बोलते जिन्होंने सुना वे जानते हैं कि अमित शाह विचारधारा के मामले में दिल से बोलते हैं। उन्होंने एक समय कश्मीर के मुद्दे पर किसी सांसद का यह कहते हुए जवाब दिया कि 'नाराज होने की बात क्या करते हो जान दे देंगे', तो एक पत्रकार की टिप्पणी थी कि यह सोच समझकर नहीं अंदर से निकला हुआ वक्तव्य है। तात्पर्य यह कि अभी तक के राजनीतिक जीवन में अमित शाह का ऐसा व्यक्तित्व नहीं रहा है जिससे लगे कि वे योगी आदित्यनाथ या किसी भी दूसरे नेता के कद को छोटा करने की कोशिश करेंगे। जो लोग योगी को अभी से प्रधानमंत्री पद का दावेदार बनाने का अभियान चला रहे हैं, उन्हें किसी तरह का समर्थन या प्रोत्साहन मिलना स्वयं योगी आदित्यनाथ एवं संपूर्ण बीजेपी के लिए घातक होगा।

राजनीति के बारे में सामान्य धारणा है कि नेताओं के बीच एक–दूसरे को पीछे धकेलने की प्रतिस्पर्धा चलती रहती है। जरा सोचिए, क्या बीजेपी में आज योगी आदित्यनाथ और अमित शाह के बीच प्रतियोगिता की स्थिति है?

# हर कदम पर साथ

अवधेश कुमार।।

इन दिनों उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुछ उत्साही समर्थकों की ओर से प्रचारित किया जा रहा है कि गृह मंत्री अमित शाह उनकी प्रगति को बाधित करना चाहते हैं। जब तक विरोधी ऐसी अफवाहें फैला रहे थे, तब तक उस पर बहुत ज्यादा टिप्पणी करने की जरूरत नहीं थी। लेकिन समर्थक ऐसा कहने लग जाएं तो उसे यूं ही टाला नहीं जा सकता। इसलिए नहीं कि यह सच है। इसलिए कि ऐसे समर्थक अपने नेता को ही नहीं, समस्त विचार योजनाओं को हानि पहुंचा बैठते हैं। राजनीति के बारे में सामान्य धारणा है कि नेताओं के बीच एक–दूसरे को पीछे धकेलने की प्रतिस्पर्धा चलती रहती है। बीजेपी इससे अछूती नहीं है। लेकिन जहां तक पार्टी के केंद्रीय और राज्यों की लीडरशिप के बीच संबंधों का प्रश्न है, इस तरह की बातें कोरी गप से ज्यादा नहीं हैं। जरा सोचिए, क्या बीजेपी में आज योगी आदित्यनाथ और अमित शाह के बीच प्रतियोगिता की स्थिति है? क्या अमित शाह को आज अपनी जगह बनाने के लिए किसी से मुकाबला करने की आवश्यकता है?

आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद बीजेपी में किसी एक नेता को लेकर सर्वमान्य स्वीकृति है तो वह अमित शाह हैं। योगी आदित्यनाथ की



क्षमता पहचान कर उन्हें सांसद से प्रदेश में शीर्ष पर लाने के पीछे अमित शाह की बड़ी भूमिका रही है। पिछले कार्यकाल में प्रदेश में जब कुछ विधायकों ने मुख्यमंत्री के विरुद्ध आवाज उठाई थी तो उसे शांत करने में भी अमित शाह की भूमिका रही, क्योंकि उन्होंने बीजेपी के हित की दृष्टि से विचार किया।

बीजेपी के दोनों शीर्ष नेता इस समय राज्यों में बेहतर नेतृत्व को उभारने के साथ उनके अंदर निहित संभावनाओं को पूरी तरह खिलने देने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। पहले राज्यों के अनेक नेता केंद्रीय नेतृत्व के प्रति असंतोष प्रकट करते मिल जाते थे। वे बताते थे कि फलां नेता फलां का समर्थन कर रहे हैं और ढिकां का विरोध कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी के बारे में कोई ऐसा कह नहीं सकता। सच यह है कि अमित शाह के बारे में भी किसी नेता से ऐसा सुनने को नहीं मिलता। उनके प्रदेश गुजरात में भी ऐसी शिकायतें नहीं हैं कि अमित शाह का अपना गुट या समूह है, जो सत्ता एवं संगठन को अपने तरीके से चलाने की कोशिश करता है।

राजनीति में यह सामान्य बात नहीं होती। स्वयं को असुरक्षित मानने वाले संकुचित लक्ष्य के नेता गुट और समूह बनाकर खेल करते रहते हैं। ऐसे में प्रांत स्तर पर कोई नेता बड़े कद का नहीं बन सकता। बीजेपी के वर्तमान नेतृत्व ने प्रदेश के नेताओं को उभरने का पूरा अवसर दिया है। योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता प्रदेश के बाहर भी कायम हुई है तो इसमें केंद्रीय नेतृत्व की भी भूमिका है। मोदी और शाह ने उनकी संभावनाओं को समझकर उन्हें संपूर्ण देश में अधिकाधिक सभाएं करने की छूट नहीं दी होती तो योगी आदित्यनाथ की सोच, क्षमता और वक्तृत्व कला से देश अवगत नहीं होता। मोदी और शाह ने ही योगी आदित्यनाथ से बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राजनीतिक प्रस्ताव पेश करवा उनके कद से देश को अवगत कराया। अमित शाह छोटे स्तर की राजनीति करते तो केंद्र से लेकर प्रदेश तक अनेक नेता जिस तरह खिलकर उभरे हैं, वैसा नहीं हो पाता। असम में हिमंत बिस्व सरमा का हिंदुत्व और राष्ट्रवाद पर ऐसा प्रखर व्यक्तित्व पहले सामने नहीं था। राज्यों के अंतर्कलह को भी नरेंद्र मोदी की सहमति से अमित शाह ने जिस ढंग से संभाला, वह भी सबके सामने है।

### सूडोकू बवाल- 5203

*****
कठिनतम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | | | | | | | 4 | |
| | | 5 | | 3 | | | 7 | |
| | | | | | 8 | | | 2 |
| | | | | | 1 | 9 | | |
| | 2 | | | | | | 8 | |
| | | 6 | 7 | | | | | |
| 1 | | | 4 | | | | | |
| | 9 | | | 2 | | 5 | | |
| | 8 | | | | | | | 1 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू बवाल -5202 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 4 | 5 | 6 | 1 | 3 | 7 | 2 | 9 |
| 7 | 2 | 6 | 4 | 9 | 5 | 3 | 8 | 1 |
| 9 | 3 | 1 | 7 | 8 | 2 | 6 | 5 | 4 |
| 1 | 7 | 2 | 9 | 6 | 8 | 4 | 3 | 5 |
| 5 | 6 | 9 | 3 | 2 | 4 | 1 | 7 | 8 |
| 4 | 8 | 3 | 5 | 7 | 1 | 9 | 6 | 2 |
| 2 | 9 | 7 | 1 | 5 | 6 | 8 | 4 | 3 |
| 3 | 1 | 8 | 2 | 4 | 7 | 5 | 9 | 6 |
| 6 | 5 | 4 | 8 | 3 | 9 | 2 | 1 | 7 |

### अपना ब्लॉग — मूल बात भूमिका के संदर्भ में

**मोहन।** निजी महत्वाकांक्षाओं से भरे संकुचित दृष्टिकोण वाला कोई नेता ऐसा नहीं कर सकता। किसी नेता की सबसे बड़ी कसौटी यही है कि उसके बारे में दूसरे नेता क्या कहते हैं। बीजेपी में शायद ही कोई मिले जो अमित शाह को लेकर नकारात्मक टिप्पणी करे। केंद्र से लेकर अनेक प्रदेशों में सत्तासीन और सबसे ज्यादा सदस्यता वाली पार्टी के इतने बड़े नेता के संदर्भ में यह स्थिति भारतीय राजनीति को देखते हुए सामान्य नहीं मानी जाएगी। संसद में अपनी प्रस्तुतियों, प्रश्नों का उत्तर देने और बहस के दौरान संसदीय मर्यादाओं का पालन करते हुए विनम्रता, आक्रामकता और तार्किकता का संतुलन अमित शाह ने प्रदर्शित किया है। हर मनुष्य में अनेक गुण होते हुए कुछ न कुछ दोष भी होते हैं। अमित शाह इसका अपवाद नहीं हो सकते। किंतु मूल बात उनकी भूमिका के संदर्भ में है।